International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-05-2025, Accepted: 11-06-2025, Published: 26-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 82-84

मालती जोशी की कहानियों में अभिव्यक्त उत्तर आधुनिकता के तत्व

बिंदु कुमारी[1], डॉ. रितु शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, कला मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
साहित्य में उत्तर आधुनिकता एक ऐसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जो 20वीं शताब्दी के मध्य से उभरकर आधुनिकता के सिद्धांतों को चुनौती देती है। उत्तर आधुनिकतावाद ने हाशिए की आवाज को केन्द्र में लाने की कोशिश की। विकास की अवधारणा को प्रश्नांकित किया। परिणामस्वरूप हाशिए की चीजें केन्द्र में आने लगीं। आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, पर्यावरण संवेदना आदि कई विमर्श शुरू हुए। समाज में शुरू हुए इन विमर्शों ने साहित्य, राजनीति, कला, फिल्म आदि कई चीजों को प्रभावित किया।
मालती जोशी ने अपने कथा संसार में इन्हीं हाशिए की आवाजों को स्वर देने की कोशिश की है। उनकी कहानियों में स्त्री स्मिता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया गया है। सामाजिक पारंपरिक ढांचे के विघटन को सूक्ष्म मनोभावों के साथ व्यक्त किया गया है। मालती जोशी की कहानियाँ भले ही बहुत श्सघनश उत्तर आधुनिक विमर्श का दावा न करें, लेकिन उनमें उत्तर आधुनिक तत्व – जैसे नारी अस्मिता, रिश्तों की जटिलता, बहुल दृष्टिकोण, पारंपरिक ढाँचों का विघटन – स्पष्ट रूप से मौजूद हैं। वे समकालीन समाज की यथार्थपरक तस्वीर प्रस्तुत करती हैं, जो उत्तर आधुनिकता के मूल भावों के अनुरूप है।

मूल शब्दः आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, नारी स्मिता, हासिये का समाज, व्यक्तिगत स्वतंत्रता।

हिंदी साहित्य की समकालीन कथा परंपरा में मालती जोशी एक सशक्त महिला रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपने लेखन में नारी मन की गहराइयों, पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं और सामाजिक विडंबनाओं को सहज, संवेदनशील और प्रभावशाली ढ़ंग में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में उत्तर आधुनिकता (Postmodernism) के कुछ तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। मालती जोशी ने अपनी कहानियों में पारंपरिक मूल्यों की पुनर्व्याख्या, स्त्री अस्मिता की खोज और व्यक्तिगत अनुभव को प्रधानता दी है।

उत्तर आधुनिकता क्या है ?

उत्तर–आधुनिकतावाद बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुआ एक सैद्धान्तिक आन्दोलन है। यह विशुद्ध साहित्यिक आन्दोलन नहीं है। साहित्य के साथ–साथ इसने कला के कई रूपों को भी प्रभावित किया है। इसने पुराने सिद्धान्तों पर फिर से विचार करने पर जोर दिया।
आधुनिकतावाद ने मनुष्य को केन्द्र में रखकर अपना विस्तार किया था। मनुष्य ने अपनी सुख–सुविधा को केन्द्र में रखा। इसके लिए नए–नए वैज्ञानिक आविष्कार किए। प्रकृति पर नियन्त्रण पाने की कोशिश की। पूँजी का विकास हुआ। भौतिक विकास को ही मनुष्य का वास्तविक विकास माना जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि प्रकृति के साथ समाज का एक बड़ा हिस्सा भी हाशिए पर चला गया। उत्तर–आधुनिकतावाद का विकास आधुनिकतावाद की इन्हीं प्रवृत्तियों के विरोध में हुआ।
उत्तर–आधुनिकतावाद ने हाशिए की आवाज को केन्द्र में लाने की कोशिश की। विकास की अवधारणा को प्रश्नांकित किया। परिणामस्वरूप हाशिए की चीजें केन्द्र में आने लगीं। आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, पर्यावरण संवेदना आदि कई विमर्श शुरू हुए। समाज में शुरू हुए इन विमर्शों ने साहित्य, राजनीति, कला, फिल्म आदि कई चीजों को प्रभावित किया।
आधुनिकता की मान्यताओं को प्रश्नांकित करते हुए हाशिए की आवाज से उत्तर–आधुनिकतावाद की शुरुआत होती है। अर्थात हासिये पर स्थित वो लोग जो आधुनिकतावाद की परिधि से बाहर रह गए थे, उत्तर– आधुनिकता ने उन्हें भी समाहित कर लिया। उनकी चिंताओं, उनकी ज़रूरतों और उनकी मनोभावों को जगह मिली। स्त्री का साहित्य के केन्द्र में आना उत्तर आधुनिक विचार है। दलित, दमित, नारी, अल्पसंख्यक जो कभी हाशिए पर थे, केन्द्र में आ रहे हैं।[1]
उत्तर आधुनिकता कोई एक सिद्धांत नहीं, बल्कि अनेक सिद्धांतों का एक नाम है। इसकी कोई बंधी–बंधाई परिभाषा नहीं। उत्तर आधुनिकता परिवर्तित होते लक्षणों को कहा गया है। डॉ. सुधीश पचौरी का मानना है कि ''यह एक ऐसा वाद है जो एक स्थिति या दशा की तरह है जो लगातार अस्थिर है, चंचल है, विखंडशील है।[2]
उत्तर–आधुनिकता को अलग–अलग तरीके से परिभाषित किया गया है। फ्रेंक करमोडे और गेराल्ड ग्राफ इसको आधुनिकतावाद का विस्तार मानते हैं। माल्कन ब्राडबरी और उहाब हसन इसे आधुनिकतावाद का विस्तार भी मानते हैं एवं उससे अलग भी। इरविंग होव इसको ह्रास और पतन मानते हैं। फ्रेडरी जेमसन इन दोनों को अलग अलग घटना मानते हैं, क्योंकि दोनों अपने मायने और सामाजिक कार्यों में अलग–अलग हैं। वे इसे मार्क्सवादी विचारधारा से जोड़कर देखते हैं। वे उत्तर–आधुनिकतावाद को लेट केपेटेटिव या मल्टीनेशनल केपेटेटिव से जोड़ते हैं; जिसने सांस्कृतिक क्षेत्र को बिल्कुल बदल दिया है।
उत्तर आधुनिकता एक ऐसी साहित्यिक–सांस्कृतिक प्रवृत्ति है जो आधुनिकता के स्थायित्व, तर्कवाद और एकमात्र सत्य के विचार को चुनौती देती है। इसमें विकेन्द्रीकरण, बहुलता, संदेहवाद, और स्थापित संरचनाओं की आलोचना जैसे तत्व शामिल होते हैं। उत्तर आधुनिक साहित्य में व्यक्ति की आत्मचेतना, सामाजिक विडंबनाओं की पहचान और भाषा की नई संरचना के माध्यम से यथार्थ का बहुस्तरीय चित्र प्रस्तुत किया जाता है।
उत्तर आधुनिकता के प्रमुख लक्षण और मालती जोशी की कहानियाँः

1. नारी अस्मिता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता

उत्तर–आधुनिक साहित्य में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, विशेष रूप से स्त्री–विमर्श, एक महत्त्वपूर्ण तत्व है, जो सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देता है। हिंदी में महिला अस्मिता को अपने लेखन के

केंद्र में लाने वाली लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, मृणाल पांडे, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया जैसी साहित्यकारों के बीच मालती जोशी का महत्वपूर्ण स्थान है। मालती जोशी ने मध्यमवर्गीय परिवारों की गहन मानवीय संवेदनाओं के साथ नारी मन के सूक्ष्म मनोभावों की पहचान की है।

मालती जोशी की कहानियाँ, जैसे 'गुड़िया का दहेज' और 'समर्पण का सुख', नारी के संघर्ष, स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों को उजागर करती हैं। उनकी नायिकाएँ प्रायः सामाजिक मानदंडों के खिलाफ अपनी पहचान और स्वायत्तता की खोज करती हैं। उदाहरण के लिए, 'पटाक्षेप' में नारी की कस्बाई मानसिकता को त्यागने की बात उत्तर–आधुनिक स्त्री–विमर्श से जुड़ती है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्त्व देता है।

मालती जोशी की कहानियों की नारी पात्र अनेकानेक जीवन अनुभव से गुजरती हैं और मध्यवर्गीय परिवारों के यथार्थ को सामने लाती हैं। मध्यवर्गीय समाज की महिलाएं, पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर, मध्यवर्गीय समस्याओं से मुकाबला कर रही हैं। कामकाजी महिलाओं के सामने चुनौतियां बड़ी हैं। इस बात को मालती जोशी रेखांकित करते हुए कहती हैं – 'स्त्री एक साथ वस्तु और मशीन बना दी गयी है।' वे इसे 'स्त्री अस्मिता के संदर्भ में एक ट्रेजेडी' मानती हैं। बदलते सामाजिक परिवेश में महिलाओं की स्थिति पर उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा था कि "स्त्री अस्तित्व का संघर्ष आज भी जारी है। न परिवार ने उसके अस्तित्वबोध को तवज्जो दिया, न बाहर की दुनिया ने।"

मालती जोशी की कहानियों में स्त्रियाँ परंपरागत भूमिकाओं में बंधी हुई जरूर दिखाई देती हैं, परंतु वे भीतर से सोचने–समझने वाली, अपने अस्तित्व के प्रति सजग स्त्रियाँ होती हैं।

उदाहरणः 'दहलीज़ पर वक्त' या 'छोटा पैकेट बड़ा धमाका' जैसी कहानियों में महिलाएँ अपने आत्मसम्मान और निर्णय लेने की क्षमता को सामने रखती हैं। 'कसक' कहानी में स्त्री के भीतर की कसक, आत्मदर्द और पहचान की खोज को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

2. मूल्य विघटन और नैतिक द्वंद्व

उत्तर–आधुनिक साहित्य में वास्तविकता को एकरैखिक या पूर्ण सत्य या केंद्रीय सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता, बल्कि उसे खंडित और बहु–आयामी दृष्टिकोण से देखा जाता है। उत्तर आधुनिकता में यह माना जाता है कि कोई भी एकमात्र 'सत्य' नहीं होता, बल्कि कई सत्य होते हैं।

मालती जोशी की कहानियों में कोई एक केंद्रीय सत्य नहीं होता, बल्कि अलग–अलग पात्रों की दृष्टियों से सत्य के विभिन्न रूप उभरते हैं। 'सुनहरी धूप का टुकड़ा' जैसी कहानियाँ जीवन को एकपक्षीय नहीं, बल्कि बहुस्तरीय दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित करती हैं। 'शब्दातीत' और 'पटाक्षेप' जैसी रचनाओं में, सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं को बहु–आयामी दृ ष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। मालती जोशी की कहानियों में यह भी स्पष्ट होता है कि रिश्तों की कोई एक परिभाषा नहीं है, और नैतिकता के प्रश्न बहुत जटिल हो सकते हैं। जैसेः पति–पत्नी के संबंधों में सामंजस्य की जगह मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ अधिक प्रमुख होती हैं।

3. पारंपरिक ढाँचों का विघटन

मालती जोशी की कहानियाँ अक्सर आदर्श परिवार या आदर्श स्त्री की छवि को खंडित करती हैं। उनकी कहानियां पारम्परिक विवाह संस्था, रिश्तों की मर्यादा और सामाजिक नैतिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं। वे सम्बन्धों में कर्तव्य के स्थान पर मानवता और स्वतंत्रता की स्थापना करती हैं। 'सुनहरी धूप का टुकड़ा' कहानी में सामाजिक स्वीकृति को प्राथमिकता न देकर रिश्तों की आत्मिकता को प्राथमिकता दी गई है।

औरत पति की अति महत्वाकांक्षाओं के लिए शहीद होती हैं और पति शहादत का तमगा लटकाए घूमता है। मालती जोशी की कहानी 'रानियाँ' में डॉ कुमार की पत्नी है, दो बेटियां भी हैं पर डॉ कुमार वंदना नाम की लड़की के साथ गहरी दोस्ती करके अपनी शादी की बात उससे छुपाकर रखी है। एक दिन वंदना को पता चलता है कि डॉ कुमार की शादी हो गई है और उसे दो बच्चियां भी हैं। यही अपने प्यार का परिणाम देखकर वंदना निराश हो जाती है। जब सक्सेना से उसे कुमार की हालात का पता चलता है तो वह कभी कुमार सामने आएगा तो पूछेगी, "जनाब, हम बीसवीं सदी के अंतिम छोर पर खड़े हैं। तुम कोई मध्ययुगीन सामंत नहीं हो कि रानियों की फौज पाल लो। एक जो तुम्हारे लिए वारिस पैदा करें, एक जो तुम्हारा मनोरंजन करें और एक जो तुम्हें राजकाज में मदद दे। और आज की नारी इतनी सक्षम है कि वह एक साथ ये सारी भूमिकाएं निभा सकती है। वह एक समय तुम्हारी गृहणी भी हो सकती है सखी भी और सचिव भी पर उसे मौका तो दो। "

'पिया पीर न जानी' की रमा भी दो बार अबोर्शन करने से दुखी होकर सोचती है श्इसी पत्थर दिल इंसान के लिए मैंने रसिका के बाद वाली दोनों कन्याओं का गर्भ में ही गला घोंट दिया था।' रमा के इन शब्दों में पीड़ा है, क्षोभ है जो उसे पति के खिलाफ विक्षोभ पैदा कर रहा है जो उसकी उपेक्षा और अकर्मण्यता से पैदा हुआ है।

मालती जोशी अपनी कहानियों के जरिये दर्शाती हैं कि वास्तविक जीवन में संबंधों में दोष, भ्रम और अपूर्णताएँ होती हैं – जो उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

4. मध्यवर्गीय स्त्री के अनुभव की बहुलताः

मालती जोशी की कहानी की स्त्री पात्रों में विविधता है। उनकी कहानियां एक ही प्रकार की स्त्री को नहीं दिखातीं, बल्कि विविध प्रकार की स्त्रियाँ – शिक्षित, घरेलू, कार्यरत, वृद्ध, युवा – और उनके अलग–अलग अनुभवों को प्रस्तुत करती हैं। यह बहुलता (pluralism) उत्तर आधुनिकता की एक विशेषता है।

शपिया पीर न जानी' की रमा एक घरेलू महिला है जो पूरी तरह पति पर आश्रित है। जो पति की उपेक्षा से आहत होकर बाद में नौकरी करने का फैसला करती है।

'मैं चुनौती हूं, पनौती नहीं' में ईशा की माँ अपनी नौकरी के दम पर पूरे घर का खर्चा चलाती है। वहीं 'क्षरण' की विमलजी सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या हैं जो रिटायर होने के बाद जब बेटे के घर रहने आती हैं तो बेटे के परिवार में उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

5. भाषा और शैली में सादगी लेकिन गहराई

उत्तर–आधुनिक साहित्य में भाषा प्रायः प्रयोगात्मक होती है, लेकिन मालती जोशी की भाषा सरल, सहज और आंचलिक शब्दों से युक्त है। उनकी कहानियों में मध्यप्रदेश और मालवा क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि झलकती है, जो पाठकों को स्थानीयता का अनुभव कराती है। हालाँकि मालती जोशी की भाषा उत्तर–आधुनिक प्रयोगात्मकता से दूर है, फिर भी उनकी कहानियों में सामाजिक संरचनाओं और परंपराओं के प्रति एक अंतर्निहित आलोचनात्मक दृष्टिकोण मिलता है, जो
उत्तर–आधुनिकता का एक सूक्ष्म तत्व हो सकता है।

मालती जोशी की भाषा सरल है, पर वह आंतरिक भावनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। उत्तर आधुनिक साहित्य में यह माना जाता है कि सादा भाषा भी जटिल भावनाओं को व्यक्त कर सकती है।

निष्कर्ष

मालती जोशी की कहानियाँ भले ही बहुत श्सघनश उत्तर आधुनिक विमर्श का दावा न करें, लेकिन उनमें उत्तर आधुनिक तत्व – जैसे नारी अस्मिता, रिश्तों की जटिलता, बहुल दृष्टिकोण, पारंपरिक ढाँचों का विघटन – स्पष्ट रूप से मौजूद हैं। वे समकालीन समाज की यथार्थपरक तस्वीर प्रस्तुत करती हैं, जो उत्तर आधुनिकता के मूल भावों के अनुरूप है।

संदर्भ

1. उत्तर आधुनिकता और दलित साहित्य, कृष्ण दत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2008, पृष्ठ 36 ।
2. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्ष, डॉ. सुधीष पचौरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996 ई, पृष्ठ–96।
3. उत्तर आधुनिक साहित्य और संस्कृति की नयी सोच, देवेन्द्र इस्सर, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996, पृष्ठ 29 ।
4. उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य चिंतन, प्रोफेसर एस डी कपूर।
5. पिया पीर न जानी, कहानी, मालती जोशी।
6. रानियाँ कहानी, मालती जोशी।